सी.एम.एफ.आर.आई बुकलेट श्रृंखला संख्या 38/2024

पारंपरिक से नवोन्वेषी तक: अबला भाई की

समुद्री शैवाल खेती की

सफलता की कहानी

अभिलेखन एवं संकलन:

दीवू डी., सुरेश कुमार मोज्जाड़ा, स्वाति लक्ष्मी पी.एस., अब्दुल अजीज, जयेश देवालिया, प्राची सिद्धार्थ बागडे, सागर जादव, मयूर एस. ताडे, आरशा सुब्रहमण्यम, रामशाद टी.एस., धनुष जानार्थन, वी. वी. आर. सुरेश

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान

पारंपरिक से नवोन्वेषी तक:

अबला भाई की समुद्री शैवाल खेती की सफलता की कहानी

भा.कृ.अ.नु.प.-केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान

द्वारा वित्तपोषित:

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
मत्स्यपालन विभाग
DEPARTMENT OF FISHERIES

सत्यमेव जयते

सी.एम.एफ.आर.आई बुकलेट श्रृंखला संख्या 38/2024

प्रकाशक:

डॉ. ए. गोपालकृष्णन
निदेशक
भा.कृ.अ.नु.प.-केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, एर्नाकुलम उत्तर पी.ओ., कोच्चि - ६८२०१८, केरला

अभिलेखक एवं संकलन

दिवू डी.
सुरेश कुमार मोज्जाड़ा
स्वाति लेक्ष्मी पी.एस.
अब्दुल अजीज़
जयेश डी. देवलिया
प्राची सिद्धार्थ बागड़े
सागर जादव
मयूर एस. ताडे
आर्षा सुब्रमण्यन
रमशाद टी.एस.
धनुष जनार्थनन
वी. वी. आर. सुरेश

उद्धरण:

दिवू डी., सुरेश कुमार मोज्जाड़ा, स्वाति लेक्ष्मी पीएस, अब्दुल अज़ीज़, जयेश डी. देवलिया, प्राची सिद्धार्थ बागड़े, सागर जादव, मयूर एस. ताडे, आर्षा सुब्रमण्यन, रमशाद टी.एस., धनुष जनार्थनन, वी. वी. आर. सुरेश (२०२४) पारंपरिक से नवोन्वेषी तक: अबला भाई की समुद्री शैवाल खेती की सफलता की कहानी

© भा.कृ.अ.नु.प.-कें.स.मा.अनु.सं. २०२४

अबला भाई, जूना बंदर के एक समर्पित मछुआरे कई वर्षों से कच्छ तट पर पारंपरिक मछली पकड़ने में लगे हुए हैं। कड़ी मेहनत के बावजूद लाभ बहुत कम था |

2014 में, अबला भाई ने

समुद्री शैवाल की खेती

में कदम रखा

परंतु, उग्र समुद्र और बांस की राफ्ट्स के कारण, उनकी प्रगति में विक्षेप हुआ।

ICAR CMFRI

ने स्थानीय समुद्री शैवाल किसानों के सामने आने वाली चुनौतियों को पहचाना और मदद के लिए कदम बढ़ाया।

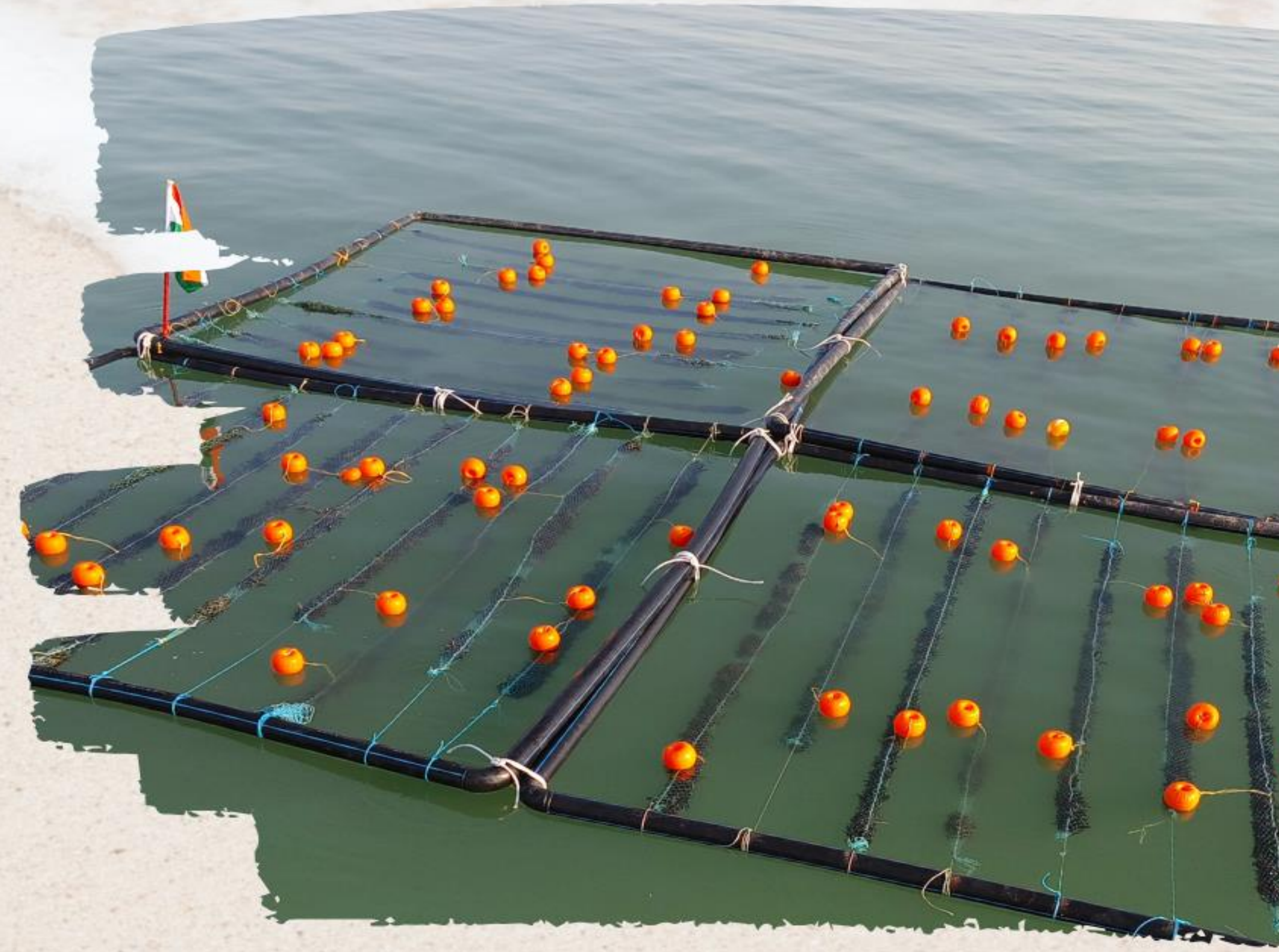

ICAR-CMFRI ने खराब समुद्री स्थितियों का सामना करने के लिए कस्टमाइज़्ड HDPE राफ्ट विकसित किए हैं, जो स्थिर और टिकाऊ हैं।

अबला भाई ने समुद्री शैवाल की खेती के लिए HDPE राफ्ट का उपयोग शुरू किया.....

HDPE राफ्ट के साथ, अबला भाई ने अपने समुद्री शैवाल उत्पादन में एक बड़ा सुधार हासिल किया, जिससे उच्च उत्पादन और बेहतर गुणवत्ता हासिल करने में मदद मिली।

एच.डी.पी.ई. राफ्ट्स ने उनकी समुद्री शैवाल की फसल और ढांचों की मजबूती बढ़ाने में मदद की।

खड़क समुद्री स्थितियों में,

एच.डी.पी.ई. राफ्ट्स के उपयोग से अबला भाई की समुद्री शैवाल की उपज में वृद्धि हुई।

अबला भाई की समुद्री शैवाल की खेती की यात्रा, ICAR-CMFRI के वैज्ञानिकों के अडिग सहयोग और मार्गदर्शन से महत्वपूर्ण रूप से समृद्ध हुई है।

मास्टर ट्रेनर

अबला भाई ने अधिक तकनीकी ज्ञान प्राप्त करने के लिए तमिलनाडु में एक मास्टर प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया

तमिलनाडु में प्रशिक्षण के लिए 6000 किमी से अधिक की यात्रा की।

समुद्री शैवाल के साथ, समृद्धि की दिशा में अग्रसर!

अबला भाई ने पारंपरिक मछुआरे से लेकर समुद्री शैवाल किसान बनने तक का एक उत्कृष्ट सफर तय किया है। उनकी प्रेरणादायी कहानी दर्शाती है कि नवाचार, दृढ़ता और समुदायिक समर्थन की शक्ति से कैसे वे एच.डी.पी.ई. राफ्ट तकनीक जैसी नई प्रौद्योगिकी का उपयोग करके महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

समुद्री शैवाल खेती के साथ ही, अबला भाई ने ग्रामीणों को नए अवसरों की खोज में प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

समुद्री शैवाल की खेती में मेरी यात्रा जीवन बदलने वाली रही है। सीएमएफआरआई के समर्थन और एचडीपीईई राफ्ट के उपयोग से, मैंने न केवल अपनी आजीविका में सुधार किया है बल्कि अपने समुदाय को भी सशक्त बनाया है। हम साथ मिलकर एक स्थायी भविष्य का निर्माण कर रहे हैं।

-अबला भाई

भाकृअनुप ICAR

सी एम एफ आर आइ CMFRI

सी.एम.एफ.आर.आई बुकलेट श्रृंखला संख्या. 38/2024

Success Story